उत्तराखण्ड संस्कृत विश्वविद्यालय, हरिद्वार

शास्त्री प्रथम सत्र

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 पर आधारित पाठ्यक्रम (सत्र 2026-27 से प्रभावी)

मौलिक चयनात्मक पाठ्यक्रम

विषय: गृह विज्ञान, कोड: GE-01

पत्र: खाद्य संरक्षण

क्रेडिट: 04

पूर्णांक: 100

सैद्धांतिक मूल्यांकन: 75

आंतरिक मूल्यांकन: 25

पाठ्यक्रम अधिगम परिणाम:

पाठ्यक्रम पूर्ण करने के पश्चात विद्यार्थी-

1. विद्यार्थी खाद्य संरक्षण का सही अर्थ और दैनिक जीवन में इसके महत्व को समझ पाते हैं।
2. पारंपरिक और आधुनिक तकनीकों (जैसे सुखाना, प्रशीतन, डिब्बाबंदी, और परिरक्षकों का उपयोग) को वर्गीकृत कर पाते हैं।
3. खाद्य पदार्थों को संभालते समय व्यक्तिगत स्वच्छता और सही भंडारण विधियों का पालन करते हैं।
4. घर और समाज में भोजन की बर्बादी रोकने के प्रति जागरूक बनते हैं

इकाई	पाठ्यविषय/ विवरण
1	• खाद्य संरक्षण: परिभाषा, अवधारणा, उद्देश्य एवं महत्व। • खाद्य अपघटन: भोजन खराब होने के मुख्य कारण (सूक्ष्मजीव, एंजाइम, नमी, हवा और तापमान)। • संरक्षण के सिद्धांत: सूक्ष्मजीवों की वृद्धि को रोकना, एंजाइमों को निष्क्रिय करना तथा कीटों से बचाव।
2	• भौतिक विधियों द्वारा खाद्य संरक्षण • तापमान नियंत्रण (उच्च तापमान): पास्चुरीकरण,स्टरलाइजेशन / विसंक्रमण, उबलना और डिब्बाबंदी • कम तापमान द्वारा संरक्षण: प्रशीतन, हिमीकरण एवं कोल्ड स्टोरेज • नमी हटाना: धूप में सुखाना और निर्जलीकरण
3	• रासायनिक एवं पारंपरिक विधियों द्वारा संरक्षण

	• प्राकृतिक परिरक्षक: • रासायनिक परिरक्षक: • उपयोग की सुरक्षित सीमाएं एवं स्वास्थ्य पर प्रभाव
4	• आधुनिक एवं उन्नत संरक्षण तकनीकें • विकिरण विधि: गामा किरणों द्वारा सूक्ष्मजीवों का विनाश। • फर्मेंटेशन: किण्वन द्वारा संरक्षण (जैसे दही, सिरका, कांजी बनाना)। • फ्रीज ड्राइंग: वैक्यूम तकनीक द्वारा सुखाना।
5	• व्यावहारिक अनुप्रयोग एवं गुणवत्ता नियंत्रण • घरेलू स्तर पर खाद्य उत्पाद निर्माण: अचार, मुरब्बा, जैम, जेली, सॉस और स्क्वैश तैयार करना। • भंडारण: बने हुए खाद्य पदार्थों का सही तापमान व नमी पर रख-रखाव।

संदर्भ ग्रंथ सूची:

1. खाद्य विज्ञान एवं पोषण, डॉ. अनीता सिंह,न्यू एज इंटरनेशनल / प्राइम पब्लिशिंग, 2018
2. खाद्य संरक्षण एवं प्रसंस्करण,डॉ. संगीता गोयल,कल्याणी पब्लिशर्स, 2020
3. आहार विज्ञान एवं खाद्य संरक्षण, डॉ. जी. पी. शैली एवं डॉ. वी. के. अग्रवाल, साहित्य भवन पब्लिकेशंस, 2019
4. खाद्य विज्ञान एवं खाद्य संरक्षण के सिद्धांत, डॉ. नीलम यादव,अग्रवाल पब्लिकेशंस, 2021
5. फल एवं सब्जी संरक्षण सिद्धांत एवं विधियाँ,डॉ. जी. एस. सिद्धप्पा एवं डॉ. जी. एल. टंडन, ICAR (भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद), 2015

उत्तराखंड संस्कृत विश्वविद्यालय , हरिद्वार

शास्त्री द्वितीय सत्र

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 पर आधारित पाठ्यक्रम (सत्र 2026-27 से प्रभावी)

मौलिक चयनात्मक पाठ्यक्रम

विषय – गृह विज्ञान, कोड: GE-02

पत्र - उद्यमिता विकास

क्रेडिट: 04

पूर्णांक: 100

सैद्धांतिक मूल्यांकन: 75

आंतरिक मूल्यांकन: 25

पाठ्यक्रम अधिगम परिणाम:

पाठ्यक्रम पूर्ण करने के पश्चात विद्यार्थी-

- उद्यम,उद्यमिता एवं उद्यमी का ज्ञान करना।
- बिजनेस कौशल का ज्ञान।
- वित्तीय प्रबंधन का ज्ञान।

इकाई	पाठ्यविषय/ विवरण
1	उद्यमिता- अर्थ, परिभाषा, अवधारणा, विशेषताएं, आवश्यकता, कार्य एवं सिद्धांत।
2	उद्यमी- अर्थ, परिभाषा, प्रकृति एवं प्रकार। उद्यम के प्रकार एवं विशेषताएं। महिला उद्यमियों के सामने आने वाली समस्याएं एवं उन्हें दूर करने के उपाय।
3	उद्यमिता विकास का अर्थ, महत्व व उपलब्धियां। भारत में उद्यमिता के धीमी विकास के कारण। उद्यमिता विकास कार्यक्रमों का मूल्यांकन। भारत में उद्यमिता विकास कार्यक्रमों को सुधारने एवं प्रभावी बनाने के सुझाव।
4	वित्तीय प्रबंधन- अर्थ, प्रत्यय एवं प्रकार। वित्त के स्रोत। SWOT विश्लेषण।
5	सृजनशीलता- अर्थ एवं परिभाषा। सृजनशीलता में वृद्धि हेतु आवश्यक उपाय। नवाचार के लाभ/ महत्व। विचार सृजन- स्रोत, तकनीकी।

संदर्भ पुस्तकें

1. भारतीय अर्थव्यवस्था, हिमालय पब्लिशिंग हाउस, वी.के. मिश्र एवं पुरी।
2. परियोजना नियोजन एवं नियंत्रण, कल्याणी पब्लिकेशंस, जोशी एवं गुप्ता।
3. अंतर्राष्ट्रीय व्यापार एवं वित्त, बी. एल. ओझा।

उत्तराखण्ड संस्कृत विश्वविद्यालय, हरिद्वार

शास्त्री तृतीय सत्र

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 पर आधारित पाठ्यक्रम (सत्र 2026-27 से प्रभावी)

मौलिक चयनात्मक पाठ्यक्रम

विषय: गृह विज्ञान, कोड: GE-03

पत्र - लघु खानपान इकाई के लिए उद्यमिता

क्रेडिट: 04

पूर्णांक: 100

सैद्धांतिक मूल्यांकन: 75

आंतरिक मूल्यांकन: 25

पाठ्यक्रम अधिगम परिणाम:

- खाद्य सेवा प्रतिष्ठान में मेनू योजना और संसाधन प्रबंधन का मौलिक ज्ञान प्राप्त करना।
- रेसिपी मानकीकरण और मात्रा में खाद्य उत्पादन की समझ विकसित करना।
- एक छोटी खाद्य सेवा इकाई के लिए व्यावसायिक योजना बनाने की समझ विकसित करना।
- एक सफल खाद्य सेवा इकाई शुरू करने के लिए प्राप्त ज्ञान का उपयोग करना।

इकाई	पाठयविषय / विवरण
1	खाद्य सेवा प्रबंधन का परिचय प्रबंधन के सिद्धांत प्रबंधन के कार्य खाद्य सेवा प्रणालियों के प्रकार
2	मेनू योजना एवं वित्तीय प्रबंधन : मेनू का महत्व, मेनू योजना को प्रभावित करने वाले कारक, मेनू के प्रकार। वित्तीय प्रबंधन का महत्व , बजट बनाने की प्रक्रिया एवं लाभ
3	खाद्य उत्पादन प्रक्रिया - खाद्य खरीद और प्राप्ति भंडारण ,खाद्य सेवा, बड़े पैमाने पर खाद्य उत्पादन : व्यंजनों (recipes) का मानकीकरण, रेसिपी में बदलाव और पोर्शन कंट्रोल (मात्रा नियंत्रण), बड़े पैमाने पर खाद्य उत्पादन की तकनीकें, खाद्य स्वच्छता और स्वच्छता प्रबन्धन , राष्ट्रीय खाद्य नियम ।
4	खाद्य सेवा इकाई की योजना बनाना संसाधनों की पहचान करना, परियोजना योजना विकसित करना, निवेश का निर्धारण करना।

	विपणन के मूल सिद्धांत (उत्पाद , मूल्य, स्थान, प्रचार)। व्यावसायिक योजना का विकास
5	स्थान और उपकरण- रसोई के क्षेत्रों के प्रकार, काम का प्रवाह उपकरण - उपकरणों के चयन को प्रभावित करने वाले कारक, विभिन्न स्थितियों के लिए उपकरणों की आवश्यकताएं

संदर्भ पुस्तकें –

- Sanjeet sharma & Prerna , Udhyamita Ewam Laghustariya vyawsay, V.K Global Publication Limited 2023 .
- Mohini sethi , Catering Management – An Integrated Approach 4th ED. New Age Publication, New Delhi.

उत्तराखण्ड संस्कृत विश्वविद्यालय, हरिद्वार

शास्त्री चतुर्थ सत्र

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 पर आधारित पाठ्यक्रम (सत्र 2026-27 से प्रभावी)

मौलिक चयनात्मक पाठ्यक्रम

विषय: गृह विज्ञान, कोड: GE-04

पत्र - प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल एवं शिक्षा

क्रेडिट: 04

पूर्णांक: 100

सैद्धांतिक मूल्यांकन: 75

आंतरिक मूल्यांकन: 25

पाठ्यक्रम अधिगम परिणाम:

- प्री-स्कूल/प्रारंभिक बाल्यावस्था शिक्षा के अर्थ और महत्व को समझना।
- प्री-स्कूल बच्चों के लिए विभिन्न गतिविधियों के बारे में महत्वपूर्ण ज्ञान प्राप्त करना।

इकाई	पाठयविषय / विवरण
1	प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा का परिचय – अर्थ , महत्व, उददेश्य एवं सिद्धांत; प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा के घटक। भारत में प्रारंभिक बाल्यावस्था शिक्षा सेवाएँ- सरकारी क्षेत्र - ICDS, NIPCCD, NCERT आदि स्वैच्छिक क्षेत्र - ICCW, बालवाड़ी, मोबाइल क्रेच, ECCE केंद्र आदि; निजी क्षेत्र (नर्सरी, प्री-प्राइमरी आदि)।
2	प्रारंभिक बाल्यावस्था के वर्ष - विकासात्मक मील के पत्थर, प्रारंभिक बाल्यावस्था के दौरान विकास: शारीरिक, संज्ञानात्मक, सामाजिक, भावनात्मक, भाषा का विकास ! शारीरिक, संज्ञानात्मक, सामाजिक, भावनात्मक, नैतिक और भाषा के विकास को प्रभावित करने वाले कारक।
3	ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य - अधिगम (सीखने) की अवधारणा: परिभाषा,विशेषताएं, सीखने के प्रकार और सिद्धांत।अधिगम का माहौल: सुदृढ़ीकरण , दंड, प्रेरणा और अनुशासन। परिवार: परिवारों के प्रकार और बच्चे के विकास पर उनका प्रभाव। परवरिश के प्रकार और बच्चों पर उनका प्रभाव।
4	शिक्षण दर्शन - कक्षा शिक्षण के सिद्धांत और उनकी प्रयोज्यता जीन पियाजे, एरिक एरिक्सन, मारिया मोंटेसरी, लॉरेंस कोहलबर्ग
5	खेल- खेल की अवधारणा; खेल और सीखना; विकास में खेल की भूमिका; बच्चों के विकास को समझने के साधन के रूप में खेल; प्री-स्कूल बच्चों में खेल के विभिन्न प्रकार (अव्यवस्थित व्यवहार, एकांत स्वतंत्र खेल, समानांतर गतिविधि, सहचारी खेल, सहकारी या संगठित खेल, पूरक खेल।

संदर्भ पुस्तकें

1. आरम्भिक बाल्यावस्था में सुरक्षा एवं शिक्षा , डॉ नूतन राजपाल।

2. बाल विकास, डॉ वृन्दा सिंह
3. Certificate course in Organising Child Care Service , IGNOU (Block 1-6) -
4. NCERT (1991), A Guide For Nursery School Teachers, NCERT, New Delhi.

उत्तराखण्ड संस्कृत विश्वविद्यालय, हरिद्वार

शास्त्री पंचम सत्र

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 पर आधारित पाठ्यक्रम (सत्र 2026-27 से प्रभावी)

मौलिक चयनात्मक पाठ्यक्रम

विषय: गृह विज्ञान, कोड: GE-05

पत्र - सामुदायिक विकास संगठन

क्रेडिट: 04

पूर्णांक: 100

सैद्धांतिक मूल्यांकन: 75

आंतरिक मूल्यांकन: 25

पाठ्यक्रम अधिगम परिणाम:

- सामुदायिक समस्याओं की पहचान
- योजनाएं बनाने का कौशल।
- संसाधनों का सही उपयोग एवं नेतृत्व तथा टीम भावना।

इकाई	पाठयविषय / विवरण
1	सामुदायिक संगठन और संस्थाओं का अर्थ, आवश्यकता और प्रकार। सामुदायिक संगठनों के सिद्धांत एवं प्रक्रिया। ग्रामीण विकास कार्यक्रमों में आधारभूत संस्थाओं का शामिल होना।
2	महिला मंडल का महत्व, उद्देश्य और कार्य। युवा क्लब का महत्व और कार्य। पंचायती राज प्रणाली का अर्थ, उद्देश्य व कार्य प्रणाली।
3	परिवार के विकास के लिए सरकारी प्रायोजित कार्यक्रम -आई.आर.डी.पी, डी. डब्ल्यू. सी. आर. ए, एन. आर. ई. पी एवं ट्राईसेम।
4	पारिवारिक विकास में गैर सरकारी एवं स्वैच्छिक संगठनों की भूमिका। ग्रामीण क्षेत्रों में कमजोर वर्गों के विकास में कार्य करने वाले सह संगठनों के प्रकार।
5	कार्यक्रम क्रियान्वयन, निगरानी और मूल्यांकन; स्थानीय नेताओं का अर्थ, पहचान एवं भूमिका। स्थानीय निकाय।

संदर्भ पुस्तकें

- सामुदायिक विकास एवं कार्यक्रम नियोजन, एस.बी.पी.डी. पब्लिशिंग हाउस, 2023.
- सामुदायिक संगठन एवं सामाजिक कार्यवाही जी आर मदन एलाइड पब्लिशर।

उत्तराखण्ड संस्कृत विश्वविद्यालय, हरिद्वार

शास्त्री षष्ठ सत्र

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 पर आधारित पाठ्यक्रम (सत्र 2026-27 से प्रभावी)

मौलिक चयनात्मक पाठ्यक्रम

विषय: गृह विज्ञान, कोड: GE-06

पत्र - आहार एवं पोषण परामर्श

पाठ्यक्रम अधिगम परिणाम:

- आहार विशेषज्ञ की संपूर्ण जानकारी।
- आहार परामर्श एवं पोषण सुरक्षा प्रक्रिया का ज्ञान होना।
- विभिन्न प्रकार के परामर्श दृष्टिकोण की जानकारी।

इकाई	पाठयविषय / विवरण
1	आहार विशेषज्ञ अर्थ एवं शैक्षिक योग्यता। आहार विशेषज्ञ के प्रकार- चिकित्सीय, शिक्षाविद, शोध विशेषज्ञ, सेवा,सार्वजनिक/ समुदाय, औद्योगिक परामर्शदाता, खेल, व्यापार आदि आहार विशेषज्ञ के गुण भूमिका और उत्तरदायित्व।
2	आहार परामर्श/ पोषण सुरक्षा प्रक्रिया- अर्थ,महत्व, उद्देश्य और नैतिक सिद्धांत। आहार परामर्श प्रक्रिया के चरण।
3	प्रभावशाली परामर्श के लिए दिशा निर्देश। आहार विशेषज्ञ के उपकरण। रजिस्टर्ड आहार विशेषज्ञ की योग्यता।
4	परामर्श दृष्टिकोण का अर्थ। परामर्श दृष्टिकोण विकसित करना। विभिन्न परामर्श दृष्टिकोण- मनोविश्लेषणात्मक व्यवहारआत्मक, मानवतावादी, रोगी केंद्रित दृष्टिकोण।
5	आहार परामर्श एवं पोषण शिक्षा में कंप्यूटर का उपयोग। आहार परामर्श एवं पोषण शिक्षा में कंप्यूटर एप्लीकेशन एवं मोबाइल का उपयोग।

संदर्भ पुस्तकें

- बी. श्रीलक्ष्मी, डायटेटिक्स,8th एडिशन, 2018, न्यू एज पब्लिकेशन।
- शुभांगिनी जोशी, न्यूट्रीशन एंड डायटेटिक्स, 5th एडिशन,2022, मैक ग्रे हिल एजुकेशन इंडिया प्राइवेट लिमिटेड।

उत्तराखण्ड संस्कृत विश्वविद्यालय, हरिद्वार

स्नातक/शास्त्री प्रथम वर्ष, प्रथम सत्र

पत्र: भारतीय ज्ञान परम्परा (रामायण : धर्म, समाज एवं जीवन-मूल्य)

कोड: VAC-01 (मूल्य योजन पाठ्यक्रम)

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 पर आधारित पाठ्यक्रम (सत्र 2026-27 से प्रभावी)

क्रेडिट: 02 पूर्णांक: 100

पाठ्यक्रम अधिगम परिणाम:

पाठ्यक्रम पूर्ण करने के पश्चात विद्यार्थी-

- भारतीय ज्ञान परम्परा में रामायण का परिचय एवं सांस्कृतिक महत्त्व समझ सकेंगे।
- रामायण में निहित धर्म, मर्यादा, कर्तव्य, लोकमंगल एवं जीवन-मूल्यों का विश्लेषण कर सकेंगे।
- रामायण के प्रमुख पात्रों के माध्यम से आदर्श जीवन-दृष्टि, सेवा, त्याग एवं नेतृत्व के मूल्यों को समझ सकेंगे।
- रामायण में वर्णित परिवार, गुरु-शिष्य परम्परा एवं सामाजिक उत्तरदायित्व के महत्त्व को पहचान सकेंगे।
- रामराज्य, सुशासन, न्याय, लोककल्याण एवं प्रकृति के साथ सह-अस्तित्व की भावना को समझ सकेंगे।
- रामायण के सांस्कृतिक प्रभाव एवं समकालीन समाज में इसकी प्रासंगिकता को समझते हुए मूल्य आधारित दृष्टिकोण विकसित कर सकेंगे।

इकाई	पाठ्यविषय/ विवरण

1	• रामायण : सामान्य परिचय
	• भारतीय ज्ञान परम्परा में रामायण का स्थान एवं महत्त्व
	• रामायण में धर्म, मर्यादा एवं लोकमंगल की अवधारणा
	• रामायण के प्रमुख पात्रों के माध्यम से आदर्श जीवन-दृष्टि एवं नैतिक मूल्य
	    ○ राम : धर्म, कर्तव्य एवं मर्यादा के आदर्श
	    ○ सीता : धैर्य, त्याग एवं नारी गरिमा का स्वरूप
	    ○ लक्ष्मण : सेवा, समर्पण एवं भ्रातृ-धर्म
	    ○ भरत : त्याग, निष्ठा एवं आदर्श नेतृत्व
	    ○ हनुमान : भक्ति, सेवा एवं कर्तव्यपरायणता

2	• रामराज्य की अवधारणा : सुशासन, न्याय एवं लोककल्याण • रामायण में प्रकृति, पर्यावरण संरक्षण एवं सह-अस्तित्व की भावना • रामायण में सामाजिक समरसता के आदर्श • रामायण में परिवार व्यवस्था, गुरु-शिष्य सम्बन्ध एवं सामाजिक उत्तरदायित्व • समकालीन समाज में रामायण की प्रासंगिकता : नैतिकता, सामाजिक उत्तरदायित्व एवं जीवन-मूल्य

सन्दर्भ सूची:

- सिंह, अमिता रानी। (1993)। रामचरितमानस में जीवन मूल्य। तिरुपति: तिरुमला तिरुपति देवस्थानम्।
- वाल्मीकि रामायण। गीता प्रेस, गोरखपुर।
- रामचरितमानस — गोस्वामी तुलसीदास।
- अरुण, विनोद बाला। (2019)। रामकथा में नैतिक मूल्य। प्रभात प्रकाशन।
- त्रिपाठी, राधिकाप्रसाद। (1974)। रामचरितमानस और वाल्मीकि रामायण। आनन्द प्रकाशन।